म-दनी चेनल
देखते रहिये

FAIZANE JUMUAA (HINDI)

फ़ैज़ाने जुमुआ़

- सरकार ने कुल कितने जुमुए अदा फ़रमाए ? 3
- जुमुआ़ के इमामा की फ़ज़ीलत 4
- दस दिन तक बलाओं से हिफ़ाज़त 5
- रिज़्क़ में तंगी का एक सबब 5
- मर्हूम वालिदैन को हर जुमुआ़ आ'माल पेश होते हैं 12
- जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है 14
- ख़ुत्बे के 7 म-दनी फूल 24
- जुमुआ़ की इमामत का अहम मस्अला 25

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ैज़ाने जुमुआ़

येह रिसाला (**फ़ैज़ाने जुमुआ़**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात,

फ़ोन : 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने जुमुआ़

शैत़ान सुस्ती दिलाएगा मगर आप येह रिसाला (26 सफ़ह़ात) पूरा पढ़ कर ईमान ताज़ा कीजिये।

जुमुआ़ को दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : जिस ने मुझ पर रोज़े **जुमुआ़** दो सो200 बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के **दो सो200 साल** के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث۲۲۳۵۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम कितने ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें **जुमुअ़तुल मुबारक** की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। अफ़्सोस ! हम ना क़दरे **जुमुआ़** शरीफ़ को भी आ़म दिनों की त़रह़ ग़फ़्लत में गुज़ार देते हैं ह़ालां कि **जुमुआ़** यौमे ईद है, **जुमुआ़** सब दिनों का सरदार है, **जुमुआ़** के रोज़ जहन्नम की आग नहीं सुलगाई जाती, **जुमुआ़** की रात दोज़ख़ के दरवाज़े नहीं ख़ुलते, **जुमुआ़** को बरोज़े क़ियामत दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा, **जुमुआ़** के रोज़ मरने वाला ख़ुश नसीब मुसल्मान शहीद का रुत्बा पाता और अ़ज़ाबे **क़ब्र** से मह़फ़ूज़ हो जाता

है । **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के फ़रमान के मुत़ाबिक़, **जुमुआ़** को ह़ज हो तो इस का सवाब सत्तर[70] ह़ज के बराबर है, **जुमुआ़ की एक नेकी का सवाब सत्तर गुना है ।** (चूंकि जुमुआ़ का शरफ़ बहुत ज़ियादा है लिहाज़ा) **जुमुआ़ के रोज़ गुनाह का अ़ज़ाब भी सत्तर गुना है ।**

(मुलख़्ख़स अज़ मिरआत, जि. 2, स. 323, 325, 336)

जुमुअ़तुल मुबारक के फ़ज़ाइल के तो क्या कहने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **जुमुआ़** के मु-तअ़ल्लिक़ एक पूरी सूरत **''सू-रतुल जुमुअ़ह''** नाज़िल फ़रमाई है जो कि क़ुरआने करीम के 28वें पारे में जगमगा रही है । **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला सू-रतुल जुमुअ़ह** की आयत नम्बर 9 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ़ के दिन तो **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो, येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो ।

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहला जुमुआ़ कब अदा फ़रमाया

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : **हुज़ूर** عَلَيْهِ السَّلَام जब हिजरत कर के **मदीनए त़य्यिबा** तशरीफ़ लाए तो 12 रबीउ़ल अव्वल (सि. 622 ई.) रोज़े दो[2] शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) को चाश्त के वक़्त

मक़ामे **कुबा** में इक़ामत फ़रमाई। दो[2] शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) सेह शम्बा (या'नी मंगल) चहार शम्बा (या'नी बुध) पंज शम्बा (या'नी जुमा'रात) यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुन्याद रखी। रोज़े **जुमुआ़ मदीनए त़य्यिबा** का अ़ज़्म फ़रमाया। बनी सालिम इब्ने औ़फ़ के बत़्ने वादी में **जुमुआ़** का वक़्त आया उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां **जुमुआ़** अदा फ़रमाया और ख़ुत़्बा फ़रमाया। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 884)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज भी उस जगह पर शानदार **''मस्जिदे जुमुआ़''** क़ाइम है और ज़ाइरीन हुसूले ब-र-कत के लिये उस की ज़ियारत करते और वहां नवाफ़िल अदा करते हैं।

जुमुआ़ के मा'ना

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : चूंकि इस दिन में तमाम मख़्लूक़ात वुजूद में **मुज्तमअ़** (या'नी इकठ्ठी) हुई कि तक्मीले ख़ल्क़ इसी दिन हुई नीज़ ह़ज़रते **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام की मिट्टी इसी दिन जम्अ़ हुई **नीज़ इस दिन में लोग जम्अ़ हो कर नमाज़े जुमुआ़ अदा करते हैं,** इन वुजूह से इसे **जुमुआ़** कहते हैं। इस्लाम से पहले अहले अ़रब इसे **अ़रूबह** कहते थे।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 317)

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुल कितने जुमुए़ अदा फ़रमाए ?

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **नबिय्ये** करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन पांच सो जुमुए पढ़े हैं इस लिये कि जुमुआ़ बा'दे हिजरत शुरूअ़ हुवा जिस के बा'द दस साल आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी शरीफ़ रही इस अ़र्से में जुमुए इतने ही होते हैं ।

(मिरआत, जि. 2, स. 346, لمعات للشیخ عبد الحق الدهلوی ج٤ص١٩٠ تحتَ الحدیث١٤١٥)

तीन जुमुए सुस्ती से छोड़े उस के दिल पर मोहर

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़नहुन अ़निल ऊ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स तीन[3] **जुमुआ़** (की नमाज़) सुस्ती के सबब छोड़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल पर मोहर कर देगा ।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٢ص٣٨حدیث٥٠٠)

जुमुआ़ फ़र्ज़े ऐ़न है और इस की फ़र्ज़िय्यत ज़ोहर से ज़ियादा **मुअक्कद** (या'नी ताकीदी) है और इस का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) काफ़िर है । (دُرِّمُختار ج ٣ص٥, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 762)

जुमुआ़ के इ़मामा की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : "बेशक **अल्लाह** तआ़ला और उस के फ़िरिश्ते **जुमुआ़ के दिन इ़मामा** बांधने वालों पर **दुरूद** भेजते हैं ।" (مَجْمَعُ الزَّوائِد ج٢ص٣٩٤حدیث٣٠٧٥)

शिफ़ा दाख़िल होती है

ह़ज़रते हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا अपने वालिद से

रिवायत करते हैं कि फ़रमाया : "जो शख़्स **जुमुआ़** के दिन अपने नाख़ुन काटता है **अल्लाह** तआ़ला उस से बीमारी निकाल कर शिफ़ा दाख़िल कर देता है।" (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج۲ ص٦٥)

दस दिन तक बलाओं से ह़िफ़ाज़त

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, **ह़दीसे** पाक में है : जो **जुमुआ़** के रोज़ नाख़ुन तरश्वाए **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुए़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन[3] दिन ज़ाइद या'नी दस[10] दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरश्वाए तो **रह़मत आएगी गुनाह जाएंगे।** (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 226, دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۹ ص٦٦٨،٦٦٩)

रिज़्क़ में तंगी का एक सबब

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **जुमुआ़** के दिन नाख़ुन तरश्वाना **मुस्तह़ब** है, हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो **जुमुआ़** का इन्तिज़ार न करे कि नाख़ुन बड़ा होना अच्छा नहीं क्यूं कि नाख़ुनों का बड़ा होना **तंगिये रिज़्क़ का सबब** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 225)

फ़िरिश्ते ख़ुश नसीबों के नाम लिखते हैं

मुस्तफ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए़ जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : "**जब जुमुआ़** का दिन आता है तो मस्जिद के दरवाज़े

पर फ़िरिश्ते आने वाले को लिखते हैं, जो पहले आए उस को पहले लिखते हैं, जल्दी आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो **अल्लाह** तआ़ला की राह में **एक ऊंट** स-दक़ा करता है, और इस के बा'द आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो **एक गाय** स-दक़ा करता है, इस के बा'द वाला उस शख़्स की मिस्ल है जो **मेंढा** स-दक़ा करे, फिर इस की मिस्ल है जो **मुर्ग़ी** स-दक़ा करे, फिर उस की मिस्ल है जो **अन्डा** स-दक़ा करे और जब इमाम (ख़ुत़्बे के लिये) बैठ जाता है तो वोह आ'माल नामों को लपेट लेते हैं और आ कर ख़ुत़्बा सुनते हैं ।" (صَحیح بُخاری ج۱ص۳۱۹حدیث۹۲۹)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि मलाएका जुमुआ़ की तुलूए़ फ़ज्र से खड़े होते हैं, बा'ज़ के नज़्दीक आफ़्ताब चमकने से, मगर ह़क़ येह है कि सूरज ढलने (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) से शुरूअ़ होते हैं क्यूं कि उसी वक़्त से वक़्ते जुमुआ़ शुरूअ़ होता है, मा'लूम हुवा कि वोह फ़िरिश्ते सब आने वालों के नाम जानते हैं, ख़याल रहे कि अगर अव्वलन सो100 आदमी एक साथ मस्जिद में आएं तो वोह सब अव्वल हैं । (मिरआत, जि. 2, स. 335)

पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : पहली सदी में स-ह़री के वक़्त और फ़ज्र के बा'द रास्ते लोगों से भरे हुए देखे जाते थे, वोह चराग़ लिये हुए (नमाज़े जुमुआ़ के लिये) जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जाते गोया ई़द

का दिन हो, ह़त्ता कि येह (या'नी नमाज़े जुमुआ़ के लिये जल्दी जाने का) का सिल्सिला ख़त्म हो गया। पस कहा गया कि इस्लाम में जो पहली बिद्अ़त ज़ाहिर हुई वोह जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाना छोड़ना है। अफ़्सोस ! मुसल्मानों को किसी त़रह़ यहूदियों से ह़या नहीं आती कि वोह लोग अपनी इ़बादत गाहों की त़रफ़ हफ़्ते और इतवार के दिन सुब्ह़ सवेरे जाते हैं नीज़ त़लब गाराने दुन्या ख़रीद व फ़रोख़्त और हुसूले नफ़्ए़ दुन्यवी के लिये सवेरे सवेरे बाज़ारों की त़रफ़ चल पड़ते हैं तो आख़िरत त़लब करने वाले इन से मुक़ाबला क्यूं नहीं करते ! (اِحیاءُ العُلوم ج۱ص۲٤٦) **जहां जुमुआ़ पढ़ा जाता है उस को "जामेअ़ मस्जिद" बोलते हैं।**

ग़रीबों का ह़ज

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْجُمُعَةُ حَجُّ الْمَسَاكِيْن या'नी **जुमुआ़** की नमाज़ मसाकीन का ह़ज है। और दूसरी रिवायत में है कि اَلْجُمُعَةُ حَجُّ الْفُقَرَاء या'नी **जुमुआ़** की नमाज़ ग़रीबों का **ह़ज** है। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج٤ ص٨٤ حديث١١١٠٩، ١١١٠٨)

जुमुआ़ के लिये जल्दी निकलना ह़ज है

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बिला शुबा तुम्हारे लिये हर **जुमुआ़** के दिन में **एक ह़ज** और **एक उ़म्रा** मौजूद है, लिहाज़ा **जुमुआ़** की नमाज़ के लिये जल्दी निकलना

ह़ज है और जुमुआ़ की नमाज़ के बा'द अ़स्र की नमाज़ के लिये इन्तिज़ार करना **उ़म्रा** है ।'' (اَلسّنَنُ الکُبری لِلْبَیْہَقِی ج۳ص۳۴۲ حدیث ۵۹۵۰)

ह़ज व उ़म्रा का सवाब

हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : (नमाज़े जुमुआ़ के बा'द) अ़स्र की नमाज़ पढ़ने तक मस्जिद ही में रहे और अगर नमाज़े मग़रिब तक ठहरे तो **अफ़्ज़ल** है । कहा जाता है कि जिस ने जामेअ़ मस्जिद में (जुमुआ़ अदा करने के बा'द वहीं रुक कर) नमाज़े अ़स्र पढ़ी उस के लिये **ह़ज** का सवाब है और जिस ने (वहीं रुक कर) मग़रिब की नमाज़ पढ़ी उस के लिये **ह़ज** और **उ़म्रे** का सवाब है। (اِحْیاءُ الْعُلوم ج۱ص۲۴۹)

सब दिनों का सरदार

नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम, सुल्त़ाने ज़ी ह़शम, ताजदारे ह़रम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : **जुमुआ़ का दिन तमाम दिनों का सरदार है** और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **ई़दुल अज़्ह़ा** और **ई़दुल फ़ित्र** से बड़ा है । इस में पांच[5] ख़स्लतें हैं : ❰1❱ **अल्लाह** तआ़ला ने इसी में आदम (عَلَیْہِ السَّلَام) को पैदा किया और ❰2❱ इसी में ज़मीन पर उन्हें उतारा और ❰3❱ इसी में उन्हें वफ़ात दी और ❰4❱ इस में एक साअ़त ऐसी है कि बन्दा उस वक़्त जिस चीज़ का सुवाल करेगा वोह उसे देगा जब तक ह़राम का सुवाल न करे और ❰5❱ इसी दिन में

क़ियामत क़ाइम होगी। कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता व आस्मान व ज़मीन और हवा व पहाड़ और दरिया ऐसा नहीं कि **जुमुआ़** के दिन से डरता न हो। (سُنَنِ اِبنِ ماجه ج۲ص۸حدیث۱۰۸٤)

जानवरों का ख़ौफ़े क़ियामत

एक और रिवायत में **सरकारे** मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है कि कोई जानवर ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन सुब्ह़ के वक़्त आफ़्ताब निकलने तक क़ियामत के डर से चीख़ता न हो, सिवाए आदमी और जिन्न के। (مُؤَطّا امام مالك ج۱ص۱۱۵حدیث۲٤٦)

दुआ़ क़बूल होती है

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इनायत निशान है : **जुमुआ़** में एक ऐसी घड़ी है कि अगर कोई मुसल्मान उसे पा कर उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कुछ मांगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ज़रूर देगा और वोह घड़ी मुख़्तसर है।

(صَحیح مُسلِم ص٤٢٤حدیث۸۵۲)

अ़स्र व मग़रिब के दरमियान ढूंडो

हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : "**जुमुआ़** के दिन जिस साअ़त की ख़्वाहिश की जाती है उसे अ़स्र के बा'द से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक तलाश करो।"

(سُنَنِ تِرمِذی ج۲ص۳۰حدیث٤۸۹)

साहिबे बहारे शरीअ़त का इर्शाद

ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : क़बूलिय्यते दुआ़ की साअ़तों के बारे में दो[2] क़ौल क़वी हैं : ﴿1﴾ इमाम के ख़ुत्बे के लिये बैठने से ख़त्मे नमाज़ तक ﴿2﴾ **जुमुआ़** की पिछली (या'नी आख़िरी) साअ़त।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 754)

क़बूलिय्यत की घड़ी कौन सी ?

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : रात में रोज़ाना क़बूलिय्यते दुआ़ की साआ़त (या'नी घड़ी) आती है मगर दिनों में सिर्फ़ **जुमुआ़** के दिन । मगर यक़ीनी त़ौर पर येह नहीं मा'लूम कि वोह साआ़त कब है, ग़ालिब येह कि **दो[2] ख़ुत्बों** के दरमियान या मग़रिब से कुछ पहले । एक और ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस साआ़त के मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमा के चालीस[40] क़ौल हैं, जिन में दो[2] क़ौल ज़ियादा क़वी हैं, एक दो[2] ख़ुत्बों के दरमियान का, दूसरा आफ़्ताब डूबते वक़्त का ।

(मिरआत, जि. 2, स. 319, 320)

ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यि-दतुना **फ़ाति-मतुज्ज़हरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस वक़्त ख़ुद हुजरे में बैठतीं और अपनी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बाहर खड़ा करतीं, जब आफ़्ताब डूबने लगता तो ख़ादिमा आप को ख़बर देतीं, उस की ख़बर पर **सय्यिदह** अपने हाथ दुआ़ के लिये उठातीं । (ऐज़न, स. 320) **बेहतर येह है कि इस साआ़त में** (कोई) जामेअ़ **दुआ़** मांगे जैसे येह क़ुरआनी दुआ़ : رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ (پ۲البقرة:۲۰۱) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा) (मिरआत, जि. 2, स. 325) दुआ़ की निय्यत से दुरूद शरीफ़ भी पढ़ सकते हैं कि दुरूदे पाक भी अ़ज़ीमुश्शान दुआ़ है । **अफ़्ज़ल येह है कि दोनों ख़ुत्बों के दरमियान बिग़ैर हाथ उठाए बिला ज़बान हिलाए दिल में दुआ़ मांगी जाए ।**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہٖ و اٰلہٖ وسلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب)

हर जुमुआ़ को एक करोड़ 44 लाख जहन्नम से आज़ाद

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नजात निशान है : **जुमुआ़** के दिन और रात में चौबीस24 घन्टे हैं कोई घन्टा ऐसा नहीं जिस में **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम से **छ6 लाख आज़ाद** न करता हो, जिन पर जहन्नम **वाजिब** हो गया था। (مُسنَد اَبی یَعلٰی ج۳ص۲۹۱-۲۳۵حدیث۳۴۲۱،۳۴۷۱)

अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़

ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) मरेगा अ़ज़ाबे **क़ब्र** से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि **उस पर शहीदों की मोहर** होगी। (حِلْیَۃُ الْاولیاء ج۳ص۱۸۱حدیث۳۶۲۹)

जुमुआ़ ता जुमुआ़ गुनाहों की मुआ़फ़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स **जुमुआ़** के दिन नहाए और जिस त़हारत (या'नी पाकीज़गी) की इस्तित़ाअ़त हो करे और तेल लगाए और घर में जो ख़ुश्बू हो मले फिर नमाज़ को निकले और दो2 शख़्सों में जुदाई न करे या'नी दो शख़्स बैठे हुए हों उन्हें हटा कर बीच में न बैठे और जो नमाज़ उस के लिये लिखी गई है पढ़े और इमाम जब ख़ुत़्बा पढ़े तो चुप रहे **उस के लिये उन गुनाहों की, जो इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान हैं मग़्फ़िरत हो जाएगी।** (صَحیح بُخاری ج۱ص۳۰۶حدیث۸۸۳)

200 साल की इ़बादत का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व ह़ज़रते सय्यिदुना इ़मरान बिन ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि **ताजदारे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो जुमुआ़ के दिन **नहाए** उस के गुनाह और ख़ताएं मिटा दी जाती हैं और जब चलना शुरूअ़ किया तो हर क़दम पर **बीस**[20] **नेकियां** लिखी जाती हैं । (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج۱۸ص۱۳۹حدیث ۲۹۲) और दूसरी रिवायत में है : हर क़दम पर बीस[20] साल का अ़मल लिखा जाता है और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो उसे **दो सो**[200] बरस के अ़मल का अज्र मिलता है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۳۱٤ حدیث ۳۳۹۷)

मर्हूम वालिदैन को हर जुमुआ़ आ'माल पेश होते हैं

दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पीर और जुमा'रात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर **आ'माल** पेश होते हैं और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और मां बाप के सामने हर **जुमुआ़** को । वोह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ाई व ताबिश (या'नी चमक दमक) बढ़ जाती है, तो **अल्लाह** से डरो और अपने वफ़ात पाने वालों को **अपने गुनाहों** से रन्ज न पहुंचाओ । (نَوادِرُ الاصول لِلحَكيم التِرمذِی ج۲ص۲٦۰)

जुमुआ़ के पांच ख़ुसूसी आ'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सईद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सरकारे दो[2] आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : पांच चीज़ें जो एक दिन में करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को **जन्नती** लिख देगा । ﴿1﴾ जो **मरीज़ की इ़यादत** को जाए ﴿2﴾ **नमाज़े जनाज़ा** में ह़ाज़िर हो ﴿3﴾ **रोज़ा** रखे ﴿4﴾ (नमाज़े) **जुमुआ़** को जाए और ﴿5﴾ **ग़ुलाम** आज़ाद करे ।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حِبّان ج٤ص۱۹۱حدیث ۲۷٦۰)

जन्नत वाजिब हो गई

हज़रते सय्यिदुना **अबू उमामा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने **जुमुआ़** की नमाज़ पढ़ी, उस दिन का **रोज़ा** रखा, किसी मरीज़ की **इ़यादत** की, किसी **जनाज़े** में ह़ाज़िर हुवा और किसी **निकाह़** में शिर्कत की तो **जन्नत** उस के लिये वाजिब हो गई। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۸ص۹۷حدیث۷۴۸۴)

सिर्फ़ जुमुआ़ का रोज़ा न रखिये

ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा **जुमुआ़** या सिर्फ़ हफ़्ता का रोज़ा रखना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को **जुमुआ़** या हफ़्ता आ गया तो कराहत नहीं। म-सलन 15 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 र-जबुल मुरज्जब** वग़ैरा। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : **जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये **ई़द** है इस दिन **रोज़ा** मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो। (اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۲ص۸۱حدیث۱۱)

दस हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब

सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : रोज़ए **जुमुआ़** या'नी जब इस के साथ **पंज शम्बा** (या'नी जुमा'रात का) या **शम्बा** (हफ़्ता का रोज़ा) भी शामिल हो, मरवी हुवा कि **दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।** (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 653)

जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है

जुमुआ़ का रोज़ा हर सूरत में मक्रूह नहीं, मक्रूह सिर्फ़ इसी सूरत में है जब कि कोई ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ का रोज़ा रखे। चुनान्चे **जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है** इस ज़िम्न में **फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा** जिल्द 10 सफ़ह़ा 559 से **सुवाल जवाब** मुला-ह़ज़ा हों, **सुवाल :** क्या

फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन इस मस्अले में कि **जुमुआ़** का रोज़ए नफ़्ल रखना कैसा है ? एक शख़्स ने **जुमुआ़** का रोज़ा रखा दूसरे ने उस से कहा : **जुमुआ़ ईदुल मुअमिनीन** है रोज़ा रखना इस दिन में मक्रूह है और ब इस्रार बा'द दो पहर के रोज़ा तुड़वा दिया...। **जवाब : जुमुआ़** का रोज़ा ख़ास इस निय्यत से कि आज **जुमुआ़** है इस का रोज़ा **बित्तख़्सीस** चाहिये मक्रूह है मगर न वोह कराहत कि तोड़ना लाज़िम हुवा, और अगर ख़ास ब निय्यते **तख़्सीस** न थी तो अस्लन कराहत भी नहीं, उस दूसरे शख़्स को अगर निय्यते मक्रूहा पर इत्तिलाअ़ न थी जब तो ए'तिराज़ ही सिरे से ह़माक़त हुवा, और रोज़ा तोड़ देना शर-अ़ पर सख़्त **जुरअत**, और अगर इत्तिलाअ़ भी हुई जब भी मस्अला बता देना काफ़ी था न कि रोज़ा तुड़वाना, और वोह भी बा'द दो पहर के, जिस का इख़्तियार नफ़्ल रोज़े में वालिदैन के सिवा किसी को नहीं, तोड़ने वाला और तुड़वाने वाला दोनों गुनहगार हुए, तोड़ने वाले पर क़ज़ा लाज़िम है कफ़्फ़ारा अस्लन नहीं। وَاللّٰہُ تعَالٰی اَعْلَم

जुमुआ़ को मां बाप की क़ब्र पर ह़ाज़िरी का सवाब

सरकारे नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : जो अपने मां बाप दोनों या एक की **क़ब्र** पर हर **जुमुआ़** के दिन ज़ियारत को ह़ाज़िर हो, **अल्लाह** तआ़ला उस के **गुनाह** बख़्श दे और मां बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिखा जाए। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطّبَرانی ج٤ص٣٢١حدیث ٦١١٤)

क़ब्रे वालिदैन पर "यासीन" पढ़ने की फ़ज़ीलत

ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रोज़े **जुमुआ़** अपने वालिदैन या एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे और उस के पास **यासीन** पढ़े बख़्श दिया जाए।

(اَلْکامِل فِی ضُعَفاءِ الرِّجال ج٦ص٢٦٠)

तीन हज़ार मग़्फ़िरतें

सुल्त़ाने ह़-रमैन, रह़मते कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बाइ़से चैन है : जो हर **जुमुआ़** वालिदैन या एक की ज़ियारते **क़ब्र** कर के वहां **यासीन** पढ़े, **यासीन** (शरीफ़) में जितने ह़र्फ़ हैं उन सब की गिनती के बराबर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये मग़्फ़िरत फ़रमाए । (اِتحافُ السّادَة ج١٤ ص٢٧٢) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर **जुमुआ़** शरीफ़ को फ़ौत शुदा वालिदैन या इन में से एक की **क़ब्र** पर ह़ाज़िर हो कर यासीन शरीफ़ पढ़ने वाले का तो बेड़ा ही पार है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ यासीन शरीफ़ में 5 रुकूअ़ 83 आयात 729 कलिमात और **3000 ह़रूफ़** हैं अगर **इन्दल्लाह** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक) येह गिनती दुरुस्त है तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **तीन हज़ार मग़्फ़िरतों का सवाब मिलेगा ।**

जुमुआ़ को यासीन पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत होगी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) **यासीन** पढ़े उस की **मग़्फ़िरत** हो जाएगी । (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج١ ص٢٩٨ حديث٤)

रूह़ें जम्अ़ होती हैं

जुमुआ़ के दिन **रूह़ें** जम्अ़ होती हैं लिहाज़ा इस में ज़ियारते क़ुबूर करनी चाहिये और **इस रोज़ जहन्नम** नहीं भड़काया जाता । (دُرِّمُختار ج٣ ص٤٩) **सरकारे** आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ज़ियारते (क़ुबूर) का अफ़्ज़ल वक़्त रोज़े जुमुआ़ बा'दे नमाज़े सुब्ह़ है । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 523)

"सू-रतुल कह्फ़" की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है : नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत

صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा अ़-ज़मत है : "जो शख़्स **जुमुआ़** के रोज़ **सू-रतुल कह्फ़** पढ़े उस के क़दम से आस्मान तक नूर बुलन्द होगा जो क़ियामत को उस के लिये रोशन होगा और **दो**[2] **जुमुओं के दरमियान जो गुनाह हुए हैं बख़्श दिये जाएंगे।"** (اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب ج ۱ ص۲۹۸ حدیث۲)

दोनों[2] जुमुआ़ के दरमियान नूर

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सई़द** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हु़ज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरुन अ़ला नूर है : "जो शख़्स बरोज़े **जुमुआ़ सू-रतुल कह्फ़** पढ़े उस के लिये दोनों[2] **जुमुओं** के दरमियान नूर रोशन होगा।"

(اَلسّنَنُ الکُبری لِلْبَیْہَقی ج۳ ص۳۵۳ حدیث۵۹۹۶)

का'बे तक नूर

एक रिवायत में है : "जो **सू-रतुल कह्फ़** शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) पढ़े उस के लिये वहां से **का'बे तक नूर** रोशन होगा।" (سُنَنِ دارِمی ج۲ ص۵۴٦ حدیث۳٤۰۷)

"सूरए ह़ा मीम अद्दुख़ान" की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उमामा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ **सू-रतुद्दुख़ान** पढ़े उस के लिये **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **जन्नत** में एक घर बनाएगा। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۸ ص۲٦٤ حدیث ۸۰۲٦)

एक रिवायत में है कि उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।

(سُنَنِ تِرمِذی ج ٤ ص٤۰۷ حدیث ۲۸۹۸)

सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों का इस्तिग़फ़ार

इमामुल अन्सारे वल मुहाजिरीन, **मुहि़ब्बुल फ़ु-क़राए वल मसाकीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स रात में **सू-रतुद्दुख़ान** पढ़े तो सुब्ह होने तक उस के लिये **सत्तर हज़ार** फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करेंगे ।"

(سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٤٠٦ حدیث ٢٨٩٧)

सारे गुनाह मुआ़फ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सुल्त़ाने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जो शख़्स जुमुआ़ के दिन नमाज़े **फ़ज्र** से पहले तीन बार اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ पढ़े **उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग से ज़ियादा हों ।**

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطّبَرانی ج٥ ص٣٩٢ حدیث٧٧١٧)

नमाज़े जुमुआ़ के बा'द

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 28 **सू-रतुल जुमुअ़ह** की आयत नम्बर 10 में इर्शाद फ़रमाता है :

فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब नमाज़े (जुमुआ़) हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और **अल्लाह** का फ़ज़्ल तलाश करो और **अल्लाह** को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे **ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान** में फ़रमाते हैं : अब (या'नी नमाज़े **जुमुआ़** के बा'द) तुम्हारे लिये जाइज़ है कि मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो या त़-लबे इ़ल्म या इ़यादते मरीज़ या शिर्कते जनाज़ा या ज़ियारते उ़-लमा या इस के मिस्ल कामों में मश्ग़ूल हो कर नेकियां ह़ासिल करो ।

मजलिसे इ़ल्म में शिर्कत

नमाज़े जुमुआ़ के बा'द मजलिसे इ़ल्म में शिर्कत करना मुस्तह़ब है । चुनान्चे **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का क़ौल है : इस आयत में (फ़क़त़) ख़रीद व फ़रोख़्त और कस्बे दुन्या मुराद नहीं बल्कि त़-लबे इ़ल्म, भाइयों की ज़ियारत, बीमारों की इ़यादत, जनाज़े के साथ जाना और इस त़रह़ के काम हैं । (کیمیائے سعادت ج۱ص۱۹۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अदाएगिये जुमुआ़ वाजिब होने के लिये ग्यारह शर्तें हैं इन में से एक भी मा'दूम (कम) हो तो फ़र्ज़ नहीं फिर भी अगर पढ़ेगा तो हो जाएगा बल्कि मर्दे आ़क़िल बालिग़ के लिये **जुमुआ़** पढ़ना अफ़्ज़ल है। ना बालिग़ ने **जुमुआ़** पढ़ा तो नफ़्ल है कि इस पर नमाज़ फ़र्ज़ ही नहीं । (دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۳ص۳۰)

"मेरे ग़ौसे आ'ज़म" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से अदाएगिये जुमुआ़ फ़र्ज़ होने की 11 शराइ़त

❁ शहर में मुक़ीम होना ❁ सिह़्ह़त, या'नी मरीज़ पर **जुमुआ़** फ़र्ज़ नहीं मरीज़ से मुराद वोह है कि मस्जिदे **जुमुआ़** तक न जा सकता हो या चला तो जाएगा मगर मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा। शैख़े फ़ानी मरीज़ के ह़ुक्म में है ❁ आज़ाद होना, ग़ुलाम पर **जुमुआ़** फ़र्ज़ नहीं और उस का आक़ा मन्अ़ कर सकता है ❁ मर्द होना ❁ बालिग़ होना ❁ आ़क़िल होना । येह दोनों[2] शर्तें ख़ास **जुमुआ़** के लिये नहीं बल्कि हर इ़बादत के वुजूब में अ़क़्ल व बुलूग़ शर्त़ है ❁ अंखियारा होना ❁ चलने पर क़ादिर होना ❁ क़ैद में न होना ❁ बादशाह या चोर वग़ैरा किसी ज़ालिम का ख़ौफ़ न होना ❁ मींह या आंधी या ओले या सर्दी का न होना या'नी इस

क़दर कि इन से नुक़्सान का ख़ौफ़े सहीह़ हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 770, 772)

जिन पर नमाज़ फ़र्ज़ है मगर किसी शर–ई उ़ज़्र के सबब जुमुआ फ़र्ज़ नहीं, उन को जुमुआ के रोज़ ज़ोहर मुआफ़ नहीं है वोह तो पढ़नी ही होगी।

जुमुआ की सुन्नतें

नमाज़े जुमुआ के लिये अव्वल वक़्त में जाना, **मिस्वाक** करना, अच्छे और **सफ़ेद** कपड़े पहनना, **तेल** और ख़ुश्बू लगाना और पहली सफ़ में बैठना **मुस्तह़ब** है और **ग़ुस्ल** सुन्नत है।

(عالمگیری ج۱ص۱٤۹، غُنیه ص۵۵۹)

ग़ुस्ले जुमुआ का वक़्त

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि ग़ुस्ले जुमुआ नमाज़ के लिये मस्नून है न कि **जुमुआ** के दिन के लिये। लिहाज़ा जिन पर जुमुआ की नमाज़ नहीं उन के लिये येह ग़ुस्ल सुन्नत नहीं, बा'ज़ उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जुमुआ का ग़ुस्ल नमाज़े जुमुआ से क़रीब करो ह़त्ता कि इस के वुज़ू से जुमुआ पढ़ो मगर ह़क़ येह है कि ग़ुस्ले जुमुआ का वक़्त तुलूए़ फ़ज्र से शुरूअ़ हो जाता है। (मिरआत, जि. 2, स. 334) मा'लूम हुवा औ़रत और मुसाफ़िर वग़ैरा जिन पर जुमुआ वाजिब नहीं है उन के लिये ग़ुस्ले जुमुआ भी सुन्नत नहीं।

ग़ुस्ले जुमुआ सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی फ़रमाते हैं : नमाज़े जुमुआ के लिये ग़ुस्ल करना सु–नने ज़वाइद से है इस के तर्क पर इ़ताब (या'नी मलामत) नहीं। (رَدُّالْمُحتار ج۱ص۳۳۹)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

ख़ुत़्बे में क़रीब रहने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **समुरह** बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हु़ज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ाज़िर रहो ख़ुत़्बे के वक़्त और इमाम से क़रीब रहो इस लिये कि आदमी जिस क़दर दूर रहेगा उसी क़दर जन्नत में पीछे रहेगा अगर्चे वोह (या'नी मुसलमान) जन्नत में दाख़िल ज़रूर होगा। (سُنَنِ ابوداوٗد ج۱ص۴۱۰حدیث۱۱۰۸)

तो जुमुआ़ का सवाब नहीं मिलेगा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **है : जो जुमुआ़ के दिन कलाम करे जब कि इमाम ख़ुत़्बा दे रहा हो तो उस की मिसाल उस गधे जैसी है जो किताबें उठाए हो और उस वक़्त जो कोई उस येह कहे कि ''चुप रहो'' तो उसे जुमुआ़ का सवाब नहीं मिलेगा।**

(مُسندِ اِمام احمد ج۱ص۴۹۴ حدیث ۲۰۳۳)

चुपचाप ख़ुत़्बा सुनना फ़र्ज़ है

जो चीज़ें नमाज़ में ह़राम हैं म-सलन खाना पीना, सलाम व जवाबे सलाम वग़ैरा येह सब ख़ुत़्बे की ह़ालत में भी **ह़राम** हैं यहां तक कि **अम्रुन बिल मा'रूफ़**, हां ख़त़ीब **अम्रुन बिल मा'रूफ़** कर (या'नी नेकी की दा'वत दे) सकता है। जब ख़ुत़्बा पढ़े, तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना **फ़र्ज़** है, जो लोग इमाम से दूर हों कि ख़ुत़्बे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना **वाजिब** है अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ या सर के इशारे से मन्अ़ कर सकते हैं ज़बान से **ना जाइज़** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 774, دُرِّمُختار ج۳ص۳۹)

ख़ुत़्बा सुनने वाला दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ सकता

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक ख़त़ीब ने लिया तो ह़ाज़िरीन दिल में दुरूद शरीफ़ पढ़ें ज़बान से पढ़ने की उस वक़्त

इजाज़त नहीं, यूंही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़िक्रे पाक पर उस वक़्त رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ज़बान से कहने की इजाज़त नहीं ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 775, دُرِّمُختار ج۳ص۴۰)

ख़ुत्बए निकाह़ सुनना वाजिब है

ख़ुत्बए जुमुआ़ के इ़लावा और ख़ुत्बों का सुनना भी वाजिब है म-सलन ख़ुत्बए ईदैन व निकाह़ वग़ैरहुमा । (دُرِّمُختار ج۳ص۴۰)

पहली अज़ान होते ही कारोबार भी ना जाइज़

पहली अज़ान के होते ही (नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाने की) कोशिश (शुरूअ़ कर देना) वाजिब है और बैअ़ (या'नी ख़रीद व फ़रोख़्त) वग़ैरा उन चीज़ों का जो सअ़य (या'नी कोशिश) के मुनाफ़ी (या'नी ख़िलाफ़) हों छोड़ देना वाजिब । यहां तक कि रास्ते चलते हुए अगर ख़रीद व फ़रोख़्त की तो येह भी ना जाइज़ और **मस्जिद** में ख़रीद व फ़रोख़्त तो **सख़्त गुनाह** है और खाना खा रहा था कि अज़ाने **जुमुआ़** की आवाज़ आई अगर येह अन्देशा हो कि खाएगा तो **जुमुआ़** फ़ौत हो जाएगा तो खाना छोड़ दे और **जुमुआ़** को जाए । **जुमुआ़** के लिये इत्मीनान व वक़ार के साथ जाए । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 775, عالمگیری ج۱ص۱۴۹، دُرِّمُختار ج۳ص۴۲)

आज कल इल्मे दीन से दूरी का दौर है, लोग दीगर इ़बादात की त़रह़ ख़ुत्बा सुनने जैसी अ़ज़ीम इ़बादत में भी ग़-लत़ियां कर के कई गुनाहों का इरतिकाब करते हैं लिहाज़ा म-दनी इल्तिजा है कि ढेरों नेकियां कमाने के लिये हर जुमुआ़ को ख़त़ीब क़ब्ल अज़ अज़ाने ख़ुत्बा मिम्बर पर चढ़ने से पहले येह ए'लान करे :

"बिस्मिल्लाह" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से ख़ुत्बे के 7 म-दनी फूल

❁ **ह़दीसे** पाक में है : "जिस ने **जुमुआ़** के दिन लोगों की गरदनें फलांगीं

उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया।" (ترمذی ج۲ص۴۸حدیث۵۱۳) इस के एक मा'ना येह हैं कि उस पर चढ़ चढ़ कर लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे।

(ह़ाशियए बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 761, 762)

❁ **ख़त़ीब** की त़रफ़ मुंह कर के बैठना सुन्नते सह़ाबा है।

❁ **बुज़ुर्गाने** दीन رَحِمَهُمُ اللهُ السَّتِين फ़रमाते हैं : दो[2] ज़ानू बैठ कर ख़ुत़्बा सुने, पहले ख़ुत़्बे में हाथ बांधे, दूसरे में ज़ानू पर हाथ रखे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो[2] रक्अ़त का सवाब मिलेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 338)

❁ **आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ख़ुत़्बे में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक सुन कर दिल में दुरूद पढ़ें कि ज़बान से सुकूत (या'नी ख़ामोशी) फ़र्ज़ है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 365)

❁ "**दुर्रे मुख़्तार**" में है : ख़ुत़्बे में खाना पीना, कलाम करना अगर्चे سُبْحٰنَ اللّٰه कहना, सलाम का जवाब देना या नेकी की बात बताना **ह़राम** है। (دُرِّمُختار ج۳ص۳۹)

❁ **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ब ह़ालते ख़ुत़्बा चलना **ह़राम** है। यहां तक उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं कि अगर ऐसे वक़्त आया कि ख़ुत़्बा शुरूअ़ हो गया तो मस्जिद में जहां तक पहुंचा वहीं रुक जाए, आगे न बढ़े कि येह अ़मल होगा और ह़ाले ख़ुत़्बा में कोई अ़मल रवा (या'नी जाइज़) नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 333)

❁ **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुत़्बे में किसी त़रफ़ गरदन फैर कर देखना (भी) **ह़राम** है। (ऐज़न, स. 334)

जुमुआ़ की इमामत का अहम मस्अला

एक बहुत ज़रूरी अम्र जिस की त़रफ़ अ़वाम की बिल्कुल तवज्जोह नहीं वोह येह है कि **जुमुआ़** को और नमाज़ों की त़रह़ समझ रखा है कि जिस

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

ने चाहा नया **जुमुआ़** क़ाइम कर लिया और जिस ने चाहा पढ़ा दिया येह **ना जाइज़** है इस लिये कि **जुमुआ़** क़ाइम करना बादशाहे इस्लाम या उस के नाइब का काम है। और जहां इस्लामी सल्त़नत न हो वहां जो **सब से बड़ा फ़क़ीह (आ़लिम) सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो, वोह** अह़कामे शरइय्या जारी करने में सुल्त़ाने इस्लाम का क़ाइम मक़ाम है लिहाज़ा वोही **जुमुआ़** क़ाइम करे, बिग़ैर उस की इजाज़त के (जुमुआ़) नहीं हो सकता और येह भी न हो तो आ़म लोग जिस को इमाम बनाएं। **आ़लिम** के होते हुए **अ़वाम** बत़ौरे ख़ुद किसी को इमाम **नहीं** बना सकते न येह हो सकता है कि दो चार[4] शख़्स किसी को इमाम मुक़र्रर कर लें **ऐसा जुमुआ़ कहीं साबित नहीं।** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 764)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ماخذ و مراجع

كتاب	مطبوعه	كتاب	مطبوعه
قران	ضیاء القران پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	سنن کبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
خزائن العرفان	رضا اکیڈمی بمبئی	مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت
صحیح بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الترغیب والترھیب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	نوادر الاصول	دار صادر بیروت
سنن ترمذی	دار الفکر بیروت	تاریخ دمشق	دار الفکر بیروت
سنن ابوداود	دار احیاء التراث العربی بیروت	لمعات	مرکز الاولیاء لاہور
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
موطا امام مالک	دار المعرفۃ بیروت	مراۃ المناجیح	ضیاء القران پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
سنن دارمی	دار الکتب العربی بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ تہران
مسند ابویعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	غنیہ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت	فتاوی عالمگیری	دار الفکر بیروت
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	درمختار	دار المعرفۃ بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الکامل فی ضعفاء الرجال	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت		